इकाई 4 शक्ति और प्राधिकार*

इकाई की संरचना

4.0 उद्देश्य

4.1 प्रस्तावना

4.2 शक्ति और प्राधिकार की अवधारणा

- 4.2.1 शक्ति
- 4.2.2 प्राधिकार
- 4.2.3 प्राधिकार के तत्व

4.3 सामाजिक क्रिया के प्रकार और प्राधिकार के प्रकार

- 4.3.1 सामाजिक क्रिया के प्रकार
- 4.3.2 प्राधिकार के प्रकार
  - 4.3.2.1 पारंपरिक प्राधिकार
  - 4.3.2.2 करिश्माई प्राधिकार
  - 4.3.2.3 तर्कसंगत–कानूनी प्राधिकार
- 4.3.3 वर्गीकरण के बीच अनुरूपता का अभाव

4.4 नौकरशाही

- 4.4.1 नौकरशाही के प्रमुख लक्षण
- 4.4.2 नौकरशाही में अधिकारियों की विशेषताएं

4.5 सारांश

4.6 संदर्भ लेख

4.7 बोध प्रश्नों के उत्तर

4.8 शब्दावली

4.0 उद्देश्य

इस इकाई को पढ़ने के बाद आपः

- मैक्स वेबर के द्वारा बताई गई शक्ति और प्राधिकार की अवधारणाओं को समझ सकेंगे;
- वेबर के सामाजिक क्रिया और प्राधिकार के प्रकारों के बीच के संबंध को समझ सकेंगे;

* प्रो. रवीन्द्र कुमार के द्वारा ईएसओ 13, ब्लॉक 4, यूनिट 16 अनुकूलित गयी है।

- प्राधिकार के तीनों प्रकारों पारंपरिक, करिश्माई और तर्कसंगत–कानूनी को विस्तार पूर्वक वर्णन कर सकेगें; और
- तर्कसंगत–कानूनी प्राधिकार के संचालन के लिए नौकरशाही एक साधन के रूप में कार्य करता है, उसकी व्याख्या कर सकेगें।

4.1 प्रस्तावना

इस इकाई में अंतर्गत शक्ति और प्राधिकार की अवधारणा को समझेगें। पहले खंड (4.2) में, वेबर के विशेष संदर्भों के साथ शक्ति और प्राधिकार की समाजशास्त्रीय अवधारणाओं की एक संक्षिप्त चर्चा की गयी है। दूसरा खंड (4.3) वेबर के द्वारा बताये सामाजिक क्रियाओं के प्रकारों का उल्लेख किया गया है जो और प्राधिकार के तीनों प्रकारों अर्थात् पारंपरिक, करिश्माई और तर्कसंगत–कानूनी प्राधिकार का विश्लेषण किया गया है। तीसरा खंड (4.4) की चर्चा नौकरशाही पर केंद्रित की गयी है जो तर्कसंगत–कानूनी प्राधिकार को अभ्यास में लाने वाला एक उपकरण है।

4.2 शक्ति और प्राधिकार

आइए, अब हम सामान्य समाजशास्त्रीय अर्थों के साथ–साथ वेबर की विशिष्ट संदर्भ में सत्ता और प्राधिकार की प्रमुख अवधारणाओं का विश्लेषण करते हैं।

4.2.1 शक्ति

हमें परिभाषित करना चाहिए कि हम लोग शक्ति से क्या समझते हैं। जितना हम सोचते हैं, शक्ति को परिभाषित करना उतना सरल नहीं है। निश्चित रूप से हम सभी ने किसी न किसी तरह से शक्ति का अनुभव किया है, शायद एक दोस्त का प्रभाव जो हमें एक राजनीतिक बैठक में जाने के लिए राजी करता है और विवश करता है, या हमलावर का वो बल जिसका हमलोग सामना करते हैं या बंदूक की नोंक पर जबरन कोई स्मार्ट फोन छीनता है। हर दिन हम लोगों को शक्ति का सामना करना पड़ता है। आइए हम कुछ परिभाषाओं पर एक नजर डालते हैं और उनकी पहचान करते हुए हम उन मतभेदों को भी समझने का प्रयास करेगें जो इस बात पर बहस करते हैं कि कैसे शक्ति की अवधारणा की जाती है।

सामान्य प्रयोग में, शक्ति शब्द का अर्थ बल या नियंत्रण करने की क्षमता से होता है। समाजशास्त्री इसे अपनी इच्छाओं को पूरा करने और अपने निर्णयों और विचारों को लागू करने के लिए एक व्यक्ति या समूह की क्षमता के रूप में वर्णित करते हैं। इसमें उनकी इच्छा के विरुद्ध भी दूसरों के व्यवहार को प्रभावित करने और/या नियंत्रित करने की क्षमता शामिल है।

कार्ल मार्क्स और मैक्स वेबर की कृतियाँ शक्ति को परिभाषित करने के लिए उत्कृष्ट आधार के रूप में काम करती हैं। मार्क्स ने स्थापित किया कि आर्थिक संरचनाएं जैसे निगम या जो पूँजी पर नियंत्रणत रखते हैं और अधिक निकट देखें तो बॉस, ये लोग ही शक्ति के सामाजिक स्रोतों का प्रतिनिधित्व करते हैं। मजदूरी के द्वारा मजदूर की कार्यक्षमता या उपस्थिति पूंजीवादी समाज की विशिष्ट उपज है। मार्क्स के अनुसार, श्रमिक, मजदूरी और वर्गीय हितों के बीच का संबंध मनुष्य को गैर मजदूरी के कार्य संबंधित स्वहितों को आगे बढ़ाने से पृथक करने का स्रोत थे बल्कि व्यक्तियों को एक–दूसरे से भी अलग करने का तरीका था। मार्क्स के लिए, सामाजिक वर्गों के बीच के संबंधों में शक्ति का एक आर्थिक संदर्भ निहित होता है।

मैक्स वेबर के दृष्टिकोण से शक्ति सामाजिक संबंधों का एक पहलू है। किसी अन्य व्यक्ति के व्यवहार पर स्वयं की इच्छा को थोपने की संभावना में इसे संदर्भित किया जा सकता है। शक्ति सामाजिक अंतःक्रिया में मौजूद होती है और असमानता की स्थिति पैदा करती है क्योंकि जिसके पास भी शक्ति होती है वह इसे दूसरों पर थोपता है। शक्ति का प्रभाव एक परिस्थिति से दूसरी परिस्थिति में भिन्न होता है। एक ओर, यह शक्तिशाली व्यक्ति की क्षमता पर निर्भर करता है कि वह शक्ति का प्रयोग करे। दूसरी ओर यह इस बात पर निर्भर करता है कि वह किस हद तक दूसरों के विरोध को रोक पाने में सक्षम होता है। वेबर कहते हैं कि जीवन के सभी क्षेत्रों में शक्ति का प्रयोग किया जा सकता है।

शक्ति युद्ध के मैदान या राजनीति तक ही सीमित नहीं है। इसे बाजार के स्थान पर, व्याख्यान मंच पर, सामाजिक समारोहों में, खेल में, वैज्ञानिक चर्चा और यहां तक कि दान की गतिविधियों में भी देखा सकता है। उदाहरण के लिए, भिक्षा या 'दान' देना भी एक प्रकार से अपनी उच्चतर आर्थिक शक्ति को दिखाने का एक सूक्ष्म तरीका है। आप भिक्षा देकर भिखारी के चेहरे पर खुशी की भावना और नहीं देकर निराशा की भावना ला सकते हैं।

शक्ति के स्रोत क्या हैं? वेबर ने शक्ति के दो विपरीत स्रोतों की चर्चा की है। ये इस प्रकार हैं:

क) वह शक्ति जो हितों के मेल से प्राप्त होती है, और वह औपचारिक रूप से मुक्त बाजार में विकसित होती है। उदाहरण के लिए, चीनी के उत्पादकों का एक समूह अपने लाभ को अधिकतम करने के लिए बाजार में उनके उत्पादन की आपूर्ति को नियंत्रित करता है।

ख) प्राधिकार की एक स्थापित प्रणाली जो आज्ञा के अधिकार और उसके पालन के कर्तव्य का निर्धारण करती है। उदाहरण के लिए, सेना में, एक जवान अपने अधिकारी की आज्ञा का पालन करने के लिए बाध्य होता है। प्राधिकार की एक स्थापित प्रणाली के माध्यम से अधिकारी अपनी शक्ति प्राप्त करता है।

1900 की शुरुआत में वेबर की शक्ति के अध्ययन के बाद से, सामाजिक वैज्ञानिकों ने समाज में शक्ति के वितरण का क्या अर्थ है, और साथ ही ये पहचानने पर ध्यान केंद्रित किया कि किस प्रकार के संसाधन कुछ व्यक्तियों और समूहों को शक्तिशाली या शक्तिविहीन बनाते हैं। अन्य लोगों ने इस धारणा को आगे बढ़ाया कि यह राजनीति में सबसे अधिक निहित है जबकि मानवीय पहलुओं के सभी पक्षों में, जैसे सामाजिक क्रियाओं और अभिव्यक्ति में नहीं है। बॉक्स 1.1 में संक्षेपित कई परिभाषाओं पर विचार करें।

बॉक्स 4.1

शक्ति की परिभाषा में विविधताएं

लेखक ने शक्ति को परिभाषित किया है ———————————— इच्छित प्रभावों के निर्माण के लेखक के रुप में है। बर्ट्रेंड रसेल (1938: 2)

शक्ति का संबंध उन निर्णयों के साथ है जो कोई भी मनुष्य उन व्यवस्थाओं के बारे में करते हैं जिनके तहत वे रहते हैं, और उन घटनाओं के बारे में जो उनके समय का इतिहास बनाते हैं ———————————— कोई भी मनुष्य इतिहास बनाने के लिए स्वतंत्र हैं लेकिन कुछ व्यक्ति दूसरों की तुलना में अधिक स्वतंत्र हैं। सी राइट मिल्स (1959: 181)

बाध्यकारी दायित्वों के निष्पादन को सुरक्षित करने की सामान्यीकृत क्षमता जब दायित्वों के सामूहिक लक्ष्यों पर उनके असर के संदर्भ में वैध ठहराया जाता है और जहां, पुनर्गणना के मामले में, नकारात्मक प्रतिबंधों द्वारा प्रवर्तन का अनुमान लगाया जाता है। टॉलकॉट पार्सन्स (1967: 297)

विनिमय या लेनदेन में प्रयोग किए जाने वाले व्यक्तियों या समूहों के बीच सभी प्रकार के प्रभाव, जहां अपनी इच्छाओं को स्वीकार करने के लिए दूसरों को पुरस्कृत करके प्रेरित करता है। पीटर ब्लाउ (1964: 115)

कुछ व्यक्तियों की दूसरों के ऊपर जान बूझ कर और पूर्वाभासी प्रभाव पैदा करने की क्षमता है। डेनिस रॉग (1979: 2)

परिणामों को प्राप्त करके सुरक्षित करने की क्षमता जहां इन परिणामों की प्राप्ति दूसरों उपक्रमों (एजेंसी) पर निर्भर करती है। एंथोनी गिडेंस (1976: 111–112)

अंत में, हमें अपने दायित्यों में निर्धारित, निंदा, वर्गीकृत कर आंका जाता है, और एक निश्चित स्थिति में जीने या मरने वाले उन लोगों के लिए, सच्चे विमर्शों के एक कार्य के रूप में, जो शक्ति के विशिष्ट प्रभावों के वाहक हैं। मिशेल फौकॉल्ट (1980: 94)

बाध्यकारी निर्णय लेने की सामाजिक क्षमता जिसका समाज के लिए दूरगामी परिणाम हैं। एंथोनी ओरम (1989: 131–132)

दूसरों के कार्यों या विचारों को प्रभावित करने की क्षमता। ऑलसेन और मार्गर (1993: 1)

स्रोतः बेट्टी ए डोबरट्ज मजण्ंस.2012. पॉवर्स, पॉलिटिक्स, एंड सोसाइटीः एन इंट्रोडक्शन टू पॉलिटिकल सोशियोलॉजी, रटलेज, लंदन और न्यूयॉर्क

जैसा कि आपने अंतिम बिंदु में देखा है कि शक्ति पर की गई कोई भी चर्चा हमें इसकी वैधता के बारे में सोचने के लिए प्रेरित करती है। यह वैधता ही है, जो वेबर के अनुसार प्राधिकार का मुख्य बिंदु है। आइए, अब हमलोग प्राधिकार की अवधारणा का उल्लेख करते हैं।

4.2.2 प्राधिकार

प्राधिकार के लिए वेबर द्वारा प्रयोग में लिये जाने वाले जर्मन शब्द ''हैरशाफ्ट'' का विभिन्न प्रकार से अनुवाद किया गया है। कुछ समाजशास्त्री इसे 'अधिकार', दूसरों का 'प्रभुत्व' या 'आदेश' कहा है। 'हैरशाफ्ट' एक ऐसी स्थिति है जिसमें हैर या स्वामी (मास्टर) दूसरों पर अपना प्रभुत्व जमाते हैं या आदेश देते हैं। रेमंड एरन (1967: 187) ने 'हैरशाफ्ट' को परिभाषित करते हुए कहा है कि मास्टर या स्वामी की क्षमता में लोगों के द्वारा आज्ञाकारिता को प्राप्त किया जाता है और सैद्धांतिक रूप से भी उसके प्रति आज्ञाकारी होते हैं। इस इकाई में, 'हैरशाफ्ट' जो वेबर की अवधारणा है वह ''प्राधिकार'' शब्द को दर्शाती है।

एक सवाल उठाया जा सकता है, अर्थात्, शक्ति और प्राधिकार के बीच अंतर क्या है? शक्ति, जैसा कि आपने समझा है कि दूसरे को नियंत्रित करने की क्षमता है या उस क्षमता को संदर्भित करता है। प्राधिकार का अर्थ वैध शक्ति से है। इसका अर्थ है कि स्वामी को आज्ञा देने का अधिकार है और वह आज्ञा मानने की अपेक्षा कर सकता है। आइए, अब उन तत्वों को देखें जो प्राधिकार का गठन करते हैं।

4.2.3 प्राधिकार के तत्व

प्राधिकार की प्रणाली के अस्तित्व के निम्नलिखित तत्वों का मौजूद रहना आवश्यक है:

i) कोई व्यक्तिगत शासक/स्वामी या शासकों/स्वामी का एक समूह।

ii) कोई व्यक्ति/समूह जो शासित होता है।

iii) शासित व्यक्तियों के आचरण को प्रभावित करने की शासक की इच्छा जो आज्ञाओं के माध्यम से व्यक्त की जा सकती है।

iv) शासकों द्वारा दिखाए गए अनुपालन या आज्ञाकारिता के संदर्भ में शासकों के प्रभाव का प्रमाण।

v) प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष साक्ष्य जो यह दर्शाता है कि शासित ने आंतरिक रूप से इस तथ्य को स्वीकार कर लिया है कि शासक के आदेशों का पालन करना चाहिए।

हम देखते हैं कि प्राधिकार का अर्थ यह है कि शासकों और शासितों के बीच पारस्परिक संबंध होना जरूरी है। शासकों का यह मानना है कि उन्हें अपने अधिकार के प्रयोग करने का वैध अधिकार है। दूसरी ओर, शासितों ने इस शक्ति को स्वीकार किया और इसका अनुपालन करते हुए इसकी वैधता को मजबूत किया है। अब सोचे और करें 1 को पूरा करने और अपनी प्रगति की जाँच करने का समय है।

सोचे और करें 1

अपने दैनिक जीवन से कम से कम पांच प्राधिकारों का उदाहरण दें। उनमें कौन से तत्व शामिल हैं? उन पर एक पृष्ठ का एक नोट तैयार करें। अपने अध्ययन केंद्र में सह–शिक्षार्थियों के साथ, यदि संभव हो, तो अपने नोट का आदान–प्रदान करें।

बोध प्रश्न 1

i) एक पंक्ति में प्राधिकार की अवधारणा को परिभाषित करें।

.....

.....

.....

.....

ii) लगभग तीन पंक्तियों में प्राधिकार के दो महत्वपूर्ण स्रोत वर्णन करें।

.....

.....

.....

.....

iii) तीन पंक्तियों में प्राधिकार के तीन महत्वपूर्ण तत्वों को इंगित करें।

.....

.....

.....

.....

आइए, अब वेबर द्वारा चिन्हित प्राधिकारों के प्रकारों का विश्लेषण करें। इससे पहले कि हम ऐसा करें, उससे पहले सामाजिक क्रिया के वर्गीकरण का अध्ययन करेगें और यह बहुत ही महत्वपूर्ण है। वेबर के प्राधिकार के प्रकारों का चर्चा किया जायेगा जो कि आप जल्द ही देखेंगे की यह सामाजिक क्रिया के प्रकारों के साथ निकटता से जुड़ा हुआ है।

4.3 सामाजिक क्रिया के प्रकार और प्राधिकार के प्रकार

मैक्स वेबर ने समाजशास्त्र को सामाजिक क्रिया के व्यापक विज्ञान के रूप में वर्णित किया है (एरेन, 1967: 187) । सामाजिक क्रिया का जो वर्गीकरण प्रस्तुत किया गया है उसी की हम संक्षेप में चर्चा करेंगे।

4.3.1 सामाजिक क्रिया के प्रकार

वेबर चार अलग–अलग प्रकार की सामाजिक क्रियाओं को पहचाना है। वो हैं:

i) किसी लक्ष्य के संबंध में ज़्वैकरेशनल क्रिया या तर्कसंगत क्रिया

इसका एक उदाहरण है: एक पुल का निर्माण करने वाला एक इंजीनियर है, जो लक्ष्य प्राप्त करने के लिए एक निश्चित तरीके से कुछ सामग्रियों का उपयोग करता है। इसकी गतिविधि अपने लक्ष्य यानि निर्माण को पूरा करने की दिशा में संचालित होती है।

ii) किसी के मूल्य के संबंध में तार्किक क्रिया (वेर्टरेशनल)

यहाँ, देश के लिए अपनी जान देने वाले सैनिक का उदाहरण दिया जा सकता है। धन की तरह विशिष्ट भौतिक लक्ष्य प्राप्त करने की दिशा में उनकी कार्यवाही निर्देशित नहीं है। यह सम्मान और देशभक्ति जैसे कुछ मूल्यों के लिए है।

iii) भावनात्मक क्रिया

इस तरह की कार्यवाही से व्यक्ति के मन की भावनात्मक स्थिति का पता चलता है। यदि कोई बस में किसी लड़की को छेड़ता है, तो उस लड़के के आपत्तिजनक व्यवहार से चिढ़कर थप्पड़ मार सकती है। उसे इतना उकसाया गया है कि उसने हिंसक प्रतिक्रिया दी है।

iv) पारंपरिक क्रिया

यह एक क्रिया उन रीति–रिवाजों और लंबे समय से मान्यताओं द्वारा निर्देशित होती है, जो अभ्यास या स्वरूप बन जाती है। पारंपरिक भारतीय समाज में, बड़ों को प्रणाम या नमस्कार करना एक तरह से स्वभाव बन जाता है और ऐसा सहज ही हो जाता है।

उपर्युक्त तथ्य से वेबर के समाजिक क्रिया के वर्गीकरण को समझा जा सकता है और प्राधिकार के वर्गीकरण में यह परिलक्षित होता है। हम इस बारे में निम्नलिखित उप–भाग (4.3.2) में चर्चा करेंगे।

4.3.2 प्राधिकार के प्रकार

जैसा कि आप पहले ही उप–खंड 4.2.1 में पढ़ चुके हैं, प्राधिकार का अर्थ वैधता से है। वेबर के अनुसार, वैधता की तीन प्रणालियां हैं, जिनमें से प्रत्येक इसके संगत मानदंडों के अनुसार है, जो कि आदेश देने की शक्ति को सही ठहराती है। यह वैधता की ये प्रणालियां

हैं जिन्हें निम्नलिखित प्रकार के प्राधिकार के रूप में नामित किया गया है।

(i) पारंपरिक प्राधिकार

(ii) करिश्माई प्राधिकार

(iii) तर्कसंगत–कानूनी प्राधिकार

आइए हम इनमें से प्रत्येक प्रकार का कुछ विस्तार से वर्णन करें।

4.3.2.1 पारंपरिक प्राधिकार

वैधता की यह व्यवस्था पारंपरिक समाजिक क्रिया से निरूपित होती है। दूसरे शब्दों में, यह प्रथागत कानून और प्राचीन परंपराओं की पवित्रता पर आधारित है। यह इस विश्वास पर आधारित है कि इसमें निश्चित प्राधिकार का सम्मान करना ही है क्योंकि यह अनादि काल से अस्तित्व में है।

पारंपरिक प्राधिकार में, शासक अपनी विरासत की स्थिति के आधार पर व्यक्तिगत अधिकार का उपभोग करते हैं। उनकी आज्ञाएँ रीति–रिवाजों के अनुसार होती हैं और उनके पास शासन से आज्ञा पालन करवाने का भी अधिकार भी होता है। अक्सर, वे अपनी शक्ति का दुरुपयोग करते हैं। जो व्यक्ति उनका पालन करते हैं, वे उनकी प्रजा कहलाते हैं। वे अपने स्वामी की व्यक्तिगत निष्ठा के कारण उनके आदेश का पालन करते है और उनके बीच दयालु संबंध का निर्माण भी होता है। आइए हम अपने ही समाज से एक उदाहरण लें। आप भारत में जाति व्यवस्था से परिचित हैं। सदियों से निम्न जातियों ने उच्च जातियों द्वारा अत्याचार को क्यों सहन किया? इसे समझाने का एक तरीका यह है क्योंकि उच्च जातियों के अधिकार को परंपरा और प्राचीन मान्यताओं का समर्थन था। कुछ लोगों का मानना है कि निम्न जातियों के उत्पीड़न को समाजिक स्वीकृति प्राप्त थी। इस प्रकार, हम देख सकते हैं कि पारंपरिक प्राधिकार लंबे समय से चली आ रही परंपराओं की पवित्र गुणवत्ता में विश्वास पर आधारित है। यह उन लोगों को वैधता देता है जो प्राधिकार का प्रयोग करते हैं।

पारंपरिक प्राधिकार लिखित नियमों या कानूनों के माध्यम से कार्य नहीं करता है। यह पीढ़ियों से वंशानुक्रम द्वारा विरासत में मिलता है। पारंपरिक प्राधिकार को नातेदारी और व्यक्तिगत पसंदीदा की मदद से प्राप्त किया जाता है।

आधुनिक समय में, पारंपरिक प्राधिकार की घटनाओं में कमी आई है। राजशाही, पारंपरिक अधिकार का कुछ विशेष (क्लासिक) उदाहरण अभी भी मौजूद है, लेकिन अत्यधिक सीमित रूप में है। इस संदर्भ में, इंग्लैंड की महारानी पारंपरिक प्राधिकार का प्रतिनिधित्व करती हैं, किन्तु जैसा कि आप जानते हैं, वे वास्तव में अपने अधिकार का प्रयोग नहीं करती हैं। उनके नाम पर कानून बनाए जाते हैं, लेकिन कानून का निर्माण विधायिका यानि लोगों के प्रतिनिधियों द्वारा तय किया जाता है। महारानी के अधीन संसद है, जो राज्य का संचालन करती है, लेकिन वह मंत्रियों की नियुक्ति नहीं करती है। वह एक नाममात्र के राष्ट्राध्यक्ष हैं। संक्षेप में, पारंपरिक प्राधिकार लंबे समय से चली आ रही परंपराओं से अपनी वैधता प्राप्त करता है, जो कुछ को आज्ञा देने और दूसरों को मानने के लिए मजबूर करने में सक्षम बनाता है। यह वंशानुगत प्राधिकार है और इसके लिए लिखित नियमों की आवश्यकता नहीं है। शासक अपने प्राधिकार का प्रयोग अपने रिश्तेदारों और मित्रों की मदद से करते हैं। वेबर इस तरह के प्राधिकार को तर्कहीन मानता है। इसलिए यह आधुनिक विकसित समाजों में बहुत कम पाया जाता है।

4.3.2.2 करिश्माई प्राधिकार

करिश्मा का अर्थ है कुछ व्यक्तियों में एक असाधारण गुण का होना (देखें बॉक्स 16.1)। ऐसे गुण से साधारण लोगों की निष्ठा और भावनाओं पर अधिकार कर लेने की अद्वितीय शक्तियाँ मिल जाती है। करिश्माई प्राधिकार किसी व्यक्ति के प्रति असाधारण आस्था और उस व्यक्ति द्वारा बताई गई जीवन के तरीके पर आधारित होता है। ऐसे अधिकार की वैधता व्यक्ति की अलौकिक या जादुई शक्तियों में विश्वास पर टिकी होती है। करिश्माई नेता, अपनी शक्ति को चमत्कार, सैन्य और अन्य जीत या शिष्यों की नाटकीय समृद्धि के माध्यम से सिद्ध करता है। जब तक करिश्माई नेता अपने शिष्यों की नजरों में अपनी चमत्कारी शक्तियों को साबित करना जारी रखते हैं, तब तक उनका प्राधिकार बरकरार रहता है। आपने महसूस किया होगा कि करिश्माई प्राधिकार जिस प्रकार की सामाजिक क्रिया से संबंधित है, वह भावनात्मक क्रिया है। करिश्माई नेताओं की शिक्षाओं और गुहार (अपील) के परिणामस्वरूप शिष्य अत्यधिक आवेशित भावनात्मक स्थिति में होते हैं। वे अपने नायक की पूजा करते हैं।

बॉक्स 4.2 करिश्मा

करिश्मा शब्द का अर्थ दिव्य या दैवीय प्रेरित उपहार है। यह ईश्वरीय कृपा का उपहार है। इस शब्द का प्रयोग वेबर द्वारा ''दूसरों पर एक प्रकार की शक्ति को निरूपित करने के लिए किया जाता है, जिसे इसके अधीन उन लोगों द्वारा प्राधिकार के रूप में भी माना जाता है। करिश्मा के धारक एक इंसान हो सकते हैं, जिस स्थिति में उनके अधिकार की व्याख्या दैवीय मिशन, अंतर्दृष्टि या नैतिक गुणों के मिथक के रूप में की जा सकती है।" (देखें स्क्रूटन 1982: 58)।

करिश्माई प्राधिकार प्रथागत मान्यताओं या लिखित नियमों पर निर्भर नहीं है। यह विशुद्ध रूप से उस नेता के विशेष गुणों का परिणाम है जो अपनी व्यक्तिगत क्षमता से शासन करता है या नियम बनाता है। करिश्माई प्राधिकार का आयोजन नहीं किया जाता है। इसलिए कोई वेतन पर आधारित कर्मचारी या प्रशासनिक व्यवस्था नहीं होता है। नेता और उनके सहायकों के पास एक नियमित व्यवसाय नहीं होता है और वे अक्सर अपनी पारिवारिक जिम्मेदारियों को अस्वीकार करते हैं। ये विशेषताएं कभी–कभी करिश्माई नेताओं को क्रांतिकारी बनाती हैं, क्योंकि उन्होंने सभी पारंपरिक सामाजिक दायित्वों और मानदंडों को अस्वीकार किया होता है।

एक व्यक्ति के व्यक्तिगत गुणों पर आधारित होने के कारण, उस नेता की मृत्यु या लापता होने पर उत्तराधिकार की समस्या उत्पन्न हो जाती है। जो नेता व्यक्ति उस नेता का स्थान लेता है, उसके पास करिश्माई शक्तियां नहीं हो सकती हैं। नेता के मूल संदेश को प्रसारित करने के लिए ऐसी स्थिति में किसी प्रकार का संगठन विकसित होता है। मूल करिश्मा पारंपरिक प्राधिकार या तर्कसंगत–कानूनी प्राधिकार में परिवर्तित हो जाता है। वेबर के अनुसार, इस प्रकार का करिश्मा या चमत्कार का नियतकरण या नेमीकरण है। (बॉक्स 4.2 देखें)

बॉक्स 4.3: नेमीकरण (Routirisation)

वेबर ने नेमीकरण का प्रयोग ''करिश्माई नेतृत्व के परिवर्तन को संस्थागत नेतृत्व में बदलने के संदर्भ में किया जिसमें व्यक्ति के व्यक्तित्व के स्थान पर पद यानि कार्यालय ही प्राधिकार का केंद्र बन जाता है। (स्क्रूटन 1982: 415)।

यदि करिश्माई नेता का कोई बेटा/बेटी या किसी करीबी रिश्तेदार उसका उत्तराधिकार प्राप्त करता है तब यह पारंपरिक प्राधिकार सफल हो जाता है। दूसरी ओर, अगर करिश्माई गुणों की पहचान करके उन्हें लिखा जाता है, तो यह तर्कसंगत कानूनी प्राधिकार में बदल जाता है, जहां कोई भी इन गुणों को प्राप्त कर सकता है। करिश्माई प्राधिकार को इस प्रकार अस्थिर और अस्थायी कहा जा सकता है। हम पूरे इतिहास में करिश्माई नेताओं के उदाहरण पा सकते हैं। संत, भविष्यवक्ता और कुछ राजनीतिक नेता ऐसे प्राधिकार के उदाहरण हैं। कबीर, नानक, जीसस, मोहम्मद, लेनिन और महात्मा गांधी, कुछ के नाम करिश्माई नेता थे। उनके व्यक्तिगत गुणों के कारण लोगों में उनके लिए श्रद्धा होती थीं और उनके द्वारा प्रचारित संदेश के कारण ही ऐसा होता था, इसलिए नहीं कि वे पारंपरिक या तर्कसंगत–कानूनी अधिकार का प्रतिनिधित्व करते थे। आइए अब मैक्स वेबर द्वारा पहचाने गए तीसरे प्रकार के प्राधिकार का वर्णन करते हैं, लेकिन इससे पहले हम बोध प्रश्न 2 हल करेंगे।

बोध प्रश्न 2

निम्नलिखित तीन प्रश्नों के सही उत्तर पर सही निशान लगाएं।

i) वेबर के अनुसार निम्नलिखित में से कौन एक प्रकार का प्राधिकार नहीं है?

   क) पारंपरिक प्राधिकार

   ख) तर्कसंगत–कानूनी प्राधिकार

   ग) करिश्माई प्राधिकार

   घ) व्यक्तिगत प्राधिकार

ii) जब किसी नेता का मूल करिश्मा पारंपरिक या तर्कसंगत–कानूनी प्राधिकार में बदल जाता है, तो वेबर इसे क्या कहते हैं?

   क) सामान्य लोगों की भक्ति को पाने के लिए किसी की शक्ति का नेमीकरण या नियमितकरण (routirisation)

   ख) वैधता की नेमीकरण

   ग) नेतृत्व करने की क्षमता की नेमीकरण

   घ) अपनी इच्छा के विरुद्ध दूसरे के व्यवहार को नियंत्रित करने के लिए एक की क्षमता की नेमीकरण

iii) पारंपरिक प्राधिकार की वैधता का स्रोत क्या है।

   क) भूमि का कानून

   बी) लंबे समय तक प्रथागत कानून

   ग) नेता का उत्कृष्ट प्रदर्शन

   घ) उपरोक्त सभी।

4.3.2.3 तर्कसंगत–कानूनी प्राधिकार

यह शब्द प्राधिकार की उस प्रणाली को संदर्भित करता है, जो तर्कसंगत और कानूनी दोनों

अर्थों में प्रयुक्त होता है। यह नियमित प्रशासनिक कर्मचारियों में निहित होती है जो विशेष लिखित नियमों और कानूनों के अनुसार कार्य करते हैं। इस प्राधिकार में लोगों के नियुक्ति का आधार उनकी प्राप्त योग्यता होती है और इसी के आधार पर उनकी नियुक्ति होती है और यह योग्यता निर्धारित और संहिताबद्ध भी होते हैं। इस प्रकार के प्राधिकार में लोग इसे एक पेशा या व्यवसाय मानते हैं और उन्हें इस कार्य के लिए वेतन दिया जाता है। इस प्रकार, यह एक तर्कसंगत–कानूनी प्रणाली है।

यह कानूनी है क्योंकि यह उस राष्ट्र के नियमों के अनुसार होता है जिसे लोग मानते हैं और पालन करने के लिए बाध्य भी होते हैं। लोग इसकी वैधता, अध्यादेश और नियमों के साथ–साथ नियमों को लागू करने वालों के पदों या उपाधियों को स्वीकार करते हैं और उनका सम्मान करते हैं।

तर्कसंगत–कानूनी प्राधिकार आधुनिक समाज की एक विशिष्ट विशेषता है। यह तर्कशक्ति की प्रक्रिया का प्रतिबिंब है। याद रखें कि वेबर तर्कसंगतता को पश्चिमी सभ्यता की प्रमुख विशेषता मानते हैं। वेबर के अनुसार, यह मानव विचार और विचार – विमर्श की विशेष देन है। अब तक आपने लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए तर्कसंगत–कानूनी प्राधिकार और तर्कसंगत क्रिया के बीच संबंध को स्पष्ट रूप से समझ लिया है।

आइए, हम तर्कसंगत–कानूनी प्राधिकार के उदाहरणों को देखें। हमलोग कर संग्राहक का पालन करते हैं क्योंकि हम उन अध्यादेशों की वैधता में विश्वास करते हैं जो वे लागू करते हैं। हम यह भी मानते हैं कि हमें कराधान नोटिस भेजने का कानूनी अधिकार है। हम अपने वाहनों को रोकते हैं जब ट्रैफिक पुलिसकर्मी हमें ऐसा करने का आदेश देता है क्योंकि हम कानून द्वारा निहित अधिकार का सम्मान करते हैं। आधुनिक समाजों को व्यक्तियों द्वारा नहीं, बल्कि कानूनों और अध्यादेशों द्वारा नियंत्रित किया जाता है। हम पुलिसकर्मी को उसकी स्थिति और उसकी वर्दी के कारण मानते हैं जो कानून का प्रतिनिधित्व करता है, इसलिए नहीं कि वह मिस्टर 'एक्स' या मिस्टर 'वाई' है। तर्कसंगत–कानूनी प्राधिकार न केवल राजनीतिक और प्रशासनिक क्षेत्रों में ही नहीं, बल्कि बैंकों और उद्योगों जैसे आर्थिक संगठनों के साथ–साथ धार्मिक और सांस्कृतिक संगठनों में भी मौजूद है।

4.3.3 वर्गीकरण के बीच अनुरूपता का अभाव

सामाजिक क्रिया के प्रकार और प्राधिकार के प्रकारों पर उपरोक्त चर्चा से यह स्पष्ट हो सकता है कि पारंपरिक प्राधिकार का संबंध पारंपरिक क्रिया से संबंधित है, तर्कसंगत–कानूनी प्राधिकार लक्ष्य के संबंध में तर्कसंगत क्रिया से संबंधित है और करिश्माई प्राधिकार का संबंध भावात्मक क्रिया से संबंधित है। हालाँकि यह आसानी से पता चलता है कि वेबर चार प्रकार की सामाजिक क्रियाओं और केवल तीन प्रकार के प्राधिकारों का चर्चा किया है। सामाजिक क्रिया की वर्गीकरण और प्राधिकार की वर्गीकरण के बीच समानता के कमी के मुद्दे पर खुली चर्चा का विषय हो सकता है।

तर्कसंगत–कानूनी प्राधिकार को आप स्पष्ट रूप से नौकरशाही की संस्था के माध्यम से समझ सकते हैं और इसके माध्यम से ही सुचारू रूप से कार्य किया जाता है। इस प्रकार कह सकते हैं कि नौकरशाही एक ऐसा माध्यम है जिसके माध्यम से तर्कसंगत–कानूनी प्राधिकार अपने कार्य को अंजाम तक पहुँचाता है। अगले भाग पर जाने से पहले, गतिविधि 2 को पूरा करें।

सोचे और करें 2

प्राधिकार की वैधता के आधार पर विशेष संदर्भ के साथ अपने स्वयं के समाज से तर्कसंगत–कानूनी या पारंपरिक प्राधिकरण का एक उदाहरण दें। एक पृष्ठ का नोट तैयार करें। अपने अध्ययन केंद्र में अपने सह–शिक्षार्थियों के नोट्स के साथ, यदि संभव हो, तो अपने नोट का आदान–प्रदान करें।

4.4 नौकरशाही

जैसा कि ऊपर उल्लेख किया गया है कि, नौकरशाही एक प्रणाली है जो तर्कसंगत–कानूनी प्राधिकरण को लागू करती है। मैक्स वेबर ने नौकरशाही का विस्तार से अध्ययन किया और एक आदर्श प्रकार के प्रारूप के संदर्भ में उल्लेख किया, जिसमें नौकरशाही की सब प्रमुख विशेषताएं शामिल है। आइए, हम इस आदर्श प्रारूप का विश्लेषण करें, जो हमें नौकरशाही की प्रमुख विशेषताओं के बारे में बताता है।

4.4.1 नौकरशाही के प्रमुख लक्षण

i) नौकरशाही अधिकार क्षेत्र के सिद्धांत के आधार पर पर्याप्त रूप से कार्य करती है जो निम्नलिखित कानूनों और नियमों और पर निर्भर करता है।

   क) नौकरशाही में शामिल होने वाली गतिविधियों को अधिकारियों के बीच आधिकारिक कर्तव्यों के रूप में वितरित किया जाता है।

   ख) यह एक स्थायी या नियमित प्रणाली है जिसके द्वारा अधिकारियों को प्राधिकार में शक्ति निहित होता है। इस प्राधिकार को राष्ट्र के कानूनों द्वारा सख्ती से पालन किया जाता है।

   ग) इसमें स्थिर और पद्धतिगत प्रक्रियाएं हैं जो यह सुनिश्चित करती हैं कि अधिकारी पर्याप्त रूप से अपने कर्तव्यों का पालन करें।

उपर्युक्त तीन विशेषताएँ 'नौकरशाही प्राधिकार' का गठन करती हैं, जो विकसित और आधुनिक समाजों में देखा जा सकता है।

ii) नौकरशाही का दूसरा लक्षण यह है कि प्राधिकार में अधिकारियों के बीच पदानुक्रम होता है। इससे हमारा तात्पर्य है कि इसमें अधीनता और आधिपत्य से निर्मित संरचना बनता है जो मजबूती से कार्य करता है। उच्च अधिकारियों के निर्देश पर निचले अधिकारी कार्य करते हैं और उनके लिए जवाबदेह भी होते हैं। इस प्रणाली का लाभ यह है कि शासित लोग निचले अधिकारियों के प्रति असंतोष होने पर उच्च अधिकारियों से अपील कर सकते हैं। उदाहरण के लिए, यदि आप किसी कार्यालय में क्लर्क या अनुभाग अधिकारी के व्यवहार या प्रदर्शन से असंतुष्ट हैं, तो आप निवारण के लिए उच्च अधिकारी से अपील कर सकते हैं।

iii) नौकरशाहों के कार्यालय का प्रबंध लिखित दस्तावेजों या फाइलों के माध्यम से किया जाता है। कर्मचारियों के द्वारा इन दस्तावजों को सुरक्षित एवं सही तरीके से रखा जाता है जो विशेष रूप से इस उद्देश्य के लिए नियुक्त किए जाते हैं।

iv) नौकरशाहों के कार्यालय का कार्य अत्यधिक विशिष्ट होता है और कर्मचारियों को तदनुरुप प्रशिक्षित किया जाता है।

v) एक पूरी तरह से विकसित नौकरशाही कार्यालय में कर्मचारियों की पूर्ण कार्य क्षमता की मांग करता है। ऐसे मामले में, अधिकारियों को निश्चित समय से ऊपर काम करने के लिए मजबूर किया जा सकता है।

एक नौकरशाही प्रणाली की मुख्य लक्षणों को देखने के बाद, आइए अब हम उन अधिकारियों के बारे में कुछ सीखें जिन्हें आपने ऊपर उल्लेख पाया है।

वेबर ने नौकरशाही प्रणाली में अधिकारियों की निम्नलिखित विशेषताओं का उल्लेख किया है:

i) अधिकारियों के लिए कार्यालय का कार्य उनका व्यवसाय' है।

ii) उन्हें अपनी नौकरियों के लिए विशेष रूप से प्रशिक्षित किया जाता है।

iii) उनकी योग्यता कार्यालय में उनकी स्थिति या रैंक को निर्धारित करती है।

iv) उनसे अपेक्षा की जाती है कि वे अपना काम ईमानदारी से करें।

उनके आधिकारिक पदों का उनके व्यक्तिगत जीवन पर भी असर पड़ता है। आइये देखते हैं कैसे।

i) नौकरशाही प्रणाली में अधिकारी समाज में एक उच्च स्थिति का दर्जा प्राप्त कर लेते हैं।

ii) अक्सर, उनकी नौकरियां में स्थानांतरण के दायित्व को भी शामिल होता है। इस संदर्भ में हमारा कहने का अर्थ यह है कि उनके अपने पेशेवर और व्यक्तिगत जीवन में कुछ अस्थिरता बनी रहती है क्योंकि कई बार एक विभाग से दूसरे विभाग में और एक स्थान से दूसरे स्थान पर स्थानांतरित किया जा सकता है।

iii) अधिकारियों को कार्य दक्षता या स्थिति के अनुसार वेतन नहीं मिलता है बल्कि उनकी रैंक यानि दर्जा के अनुसार ही वेतन का निर्धारण होता है। दर्जा जितना ऊँचा होगा वेतन भी उतना होगा। उन्हें पेंशन, भविष्य निधि, चिकित्सा और अन्य सुविधाओं जैसे लाभ भी प्राप्त होते हैं। उनकी नौकरियों को बहुत सुरक्षित माना जाता है।

iv) अधिकारी को अच्छे करियर की संभावनाएं भी बनी रहती हैं। यदि वे अनुशासित तरीके से काम करते हैं तो वे नौकरशाही में निचले पायदानों से ऊंचे स्थानों पर पहुँच सकते हैं।

यह समय बोध प्रश्न 3 को हल करने का है।

बोध प्रश्न 3

i) नौकरशाही इसका एक उदाहरण है।

क) पारंपरिक प्राधिकार ।

ख) तर्कसंगत–कानूनी प्राधिकार।

ग) करिश्माई प्राधिकार।

घ) उपरोक्त में से कोई नहीं।

ii) नौकरशाही प्राधिकार के महत्त्वपूर्ण लक्षणों का तीन पंक्तियों में उल्लेख करें।

.....

.....

.....

.....

.....

iii) नौकरशाही के अधिकारियों की चार विशेषताओं में उल्लेख करें ।

.....

.....

.....

.....

.....

4.5 सारांश

यह इकाई 'शक्ति' और 'प्राधिकार' की वेबरियन अवधारणाओं की चर्चा के साथ शुरू हुई। इसके बाद मैक्स वेबर द्वारा बताये गए सामाजिक क्रिया के प्रकारों पर चर्चा की गई, उसके बाद उनके द्वारा वर्णित प्राधिकार के प्रकारों का भी विश्लेषण किया गया। इसके बाद हमलोगों ने कुछ विस्तार से पारंपरिक, करिश्माई और तर्कसंगत–कानूनी प्राधिकार का अध्ययन किया। अंत में, यह इकाई नौकरशाही प्रणाली पर ध्यान केंद्रित किया है, जिसके माध्यम से तर्कसंगत–कानूनी प्राधिकार संचालित होता है। इस इकाई में नौकरशाही कार्यालय की विशेषताओं को रेखांकित किया गया और इसके गठन वाले अधिकारियों या कर्मचारियों भी चर्चा की गयी।

4.6 शब्दावली

शक्ति : दूसरों पर अपनी इच्छा थोपने की क्षमता।

प्राधिकार : जब शक्ति वैध हो जाती है तो वह प्राधिकार बन जाता है।

आदर्श प्रारूप : वेबर द्वारा विकसित एक शोध पद्धति का साधन है जिसके माध्यम से किसी घटना की सबसे अधिक पाई जाने वाली विशेषताएं को व्यक्त किया जाता है। आदर्श प्रारूप एक विश्लेषणात्मक विधि है जिसके साथ सामाजिक वैज्ञानिक मौजूदा समय की वास्तविकता को तुलनात्मक .ष्टि से देखता है।

सामान्यीकरण/ नैमीकरण : करिश्माई प्राधिकार के पारंपरिक या तर्कसंगत कानूनी प्राधिकार में परिवर्तन की एक प्रक्रिया।

मुद्रा अर्थव्यवस्था : किसी भी आर्थिक लेन देन को पैसे के द्वारा किया किया जाता है।

4.7 उपयोगी पुस्तकें

बेंडिक्स, रेनहार्ड. 1960. मैक्स वेबरः एन इंटेलेक्चुअल पोर्टरेट. हाईनमनः लंदन.

फ्रायंड, जुलिएन. 1968. द सोशियोलॉजी ऑफ मैक्स वेबर. रैंडम हाउसः न्यूयॉर्क.

एलन, कीरन. 2004. मैक्स वेबरः ए क्रिटिकल इंट्रोडक्शन. प्लूटो प्रेसः एन आर्बर.

4.8 बोध प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न 1

i) शक्ति दूसरों पर अपनी इच्छा थोपने की क्षमता है।

ii) शक्ति औपचारिक मुक्त बाजार में पनपने वाले हितों के मेल में विकसित होती है। शक्ति को फिर से प्राधिकार की एक स्थापित प्रणाली से प्राप्त किया जा सकता है जो आज्ञा पालन करने का अधिकार और कर्तव्य का निर्धारण करता है।

iii) क) व्यक्तिगत शासक/स्वामी या शासकों/स्वामी के एक समूह की उपस्थिति

ख) शासित कोई व्यक्ति/समूह की उपस्थिति

ग) शासक द्वारा दिखाए गए अनुपालन और आज्ञाकारिता के संदर्भ में शासकों के प्रभाव का प्रमाण

बोध प्रश्न 2

i) घ)

i) क)

iii) ख)

बोध प्रश्न 3

i) ख)

ii) नौकरशाही प्राधिकार के महत्वपूर्ण लक्षण हैं

क) यह क्षेत्राधिकार क्षेत्र के सिद्धांत पर काम करता है जो कुछ प्रशासनिक नियमों पर निर्भर करता है।

ख) एक स्थाई नियमित प्रणाली है जिसके द्वारा अधिकारियों को अधिकार के साथ निहित किया जाता है।

ग) कठोर और व्यवस्थित प्रक्रियाएं हैं जो यह सुनिश्चित करती हैं कि अधिकारी पर्याप्त रूप से अपने कर्तव्यों का पालन करें।

iii) नौकरशाही के अधिकारियों की महत्वपूर्ण विशेषताएं हैंः

क) कार्यालय का काम अधिकारी के लिए एक व्यवसाय है

ख) अधिकारियों को विशेष रूप से उनकी नौकरी के लिए प्रशिक्षित किया जाता है

ग) उनकी योग्यता कार्यालय में उनकी स्थिति या रैंक निर्धारित करती है, और

घ) उनसे ईमानदारी से काम करने की अपेक्षा की जाती है।